शोध सारांश

व्यंग्य का जन्म अपने समय की विद्रूपताओं के भीतर से उपजे असंतोष से होता है। विद्वानों में हमेशा से यह विवाद बना रहा हैकि इसे एक अलग विधा माना जाए या किसी भी विधा के भीतर(स्प्रिट) के रूप मे मौजूद शैली माना जाए । दरअसल व्यंग्य एक माध्यम है जिसके द्वारा व्यंग्यकार जीवन की विसंगतियों, खोखलेपन और पाखंड को दुनिया के सामने उजागर करता है। जिससे हम सभी परिचित तो होते हैं किन्तु उन स्थितियों को दूर करने, बदलने की कोशिश नहीं करते बहुधा उन्हीं विद्रुपताओं, विसंगतियों के बीच जीने की, उनसे समझौता करने की आदत बना लेते हैं।

प्रस्तुत शोध-विषय हिंदी के जाने-माने व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई और मैथिली के प्रतिष्ठित व्यंग्यकार हरिमोहन झा की व्यंग्य कृतियों 'वैष्णव की फिसलन' एवं 'खट्टर काका' पर आधारित है। व्यंग्य को एक स्वतंत्र विधा के रूप में पहचान दिलाने में हरिशंकर परसाई एवं हरिमोहन झा दोनों का अपनी-अपनी भाषाओं के साहित्य में अप्रतिम योगदान है। हरिमोहन झा ने अपनी व्यंग्य कृति 'खट्टर काका' के माध्यम से कर्मकांडों, धार्मिक विसंगतियों एवं सामाजिक रुढियों पर करारा व्यंग्य किया है। कुछ इसी प्रकार की धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक विसंगतियों को लक्ष्य करके हरिशंकर परसाई ने 'वैष्णव की फिसलन' नामक व्यंग्यात्मक निबंध संग्रह का सृजन किया है।

व्यंग्य को एक साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप में देखा जाए अथवा एक स्वतंत्र विधा के रूप में, यह प्रश्न वाद-विवाद का है। परन्तु यह निर्विवाद है कि हरिशंकर परसाई और हरिमोहन झा ने अपने-अपने समृद्ध श्रेष्ठ व्यंग्य लेखन के माध्यम से हिंदी एवं मैथिली साहित्य में व्यंग्य कोस्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित किया है।प्रस्तुत शोध-विषय इन दोनों ही बड़े व्यंग्यकारों कीश्रेष्ठ व्यंग्य रचनाओं में व्यंग्य के स्वरूप एवं उसकी भूमिका का एक तुलनात्मक आधार तैयारकरता है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध 'खट्टर काका' और 'वैष्णव की फिसलन' के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से हरिमोहन झा और हरिशंकर परसाई ने मिथिला व हिंदी समाज की विद्रूपताओं को उजागर करने का मुख्य कार्य किया है। व्यंग्य की सार्थकता को प्रत्येक वह साहित्यकार स्वीकार करता है जिसका सजग, संघर्षशील मस्तिष्क समस्यों से पीड़ित तथा समकालीन समाज में व्याप्त विसंगतियों से विक्षुब्ध हो। हिंदी में हरिशंकर परसाई एवं मैथिली में हरिमोहन झा ने व्यंग्य की शक्ति को पहचान कर व्यंग्य को स्वतंत्र विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध हरिमोहन झा और हरिशंकर परसाई की दो प्रमुख व्यंग्य कृतियों'खट्टर काका' और 'वैष्णव की फिसलन' के माध्यम से विभिन्न आयामों को जानने, सटीकता एवं विषयांतर की प्रवृत्तियों को टटोलने, सार्थक व्यंग्य के प्रयोगों और प्रसंगों को तलाशने, लोकजीवन एवं जनतंत्र की छाया में व्यंग्याभिक्तियों के पलने और विकसित होने, भारतीय मिथक एवं फंतासी के माध्यम से व्यंग्य में पैदा होने वाली चमक को निखारना।

खट्टर काका जिन लोगों से बात करते है, उन्हें व्यंग्य के रस से सराबोर कर देते हैं। उनकी हास्य लहरी में पड़कर शास्त्र-पुराण, स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य सभी की नाव डगमगाने लगती है। व्यंग्य-विनोद की बाढ़ में बड़े-बड़े देवता भस जाते है। पाखंड-खंडन में वह प्रमाणों और व्यंग्य-बाणों की ऐसी झड़ियाँ लगा देते हैं, जिनका जवाब नहीं। खट्टर काका के व्यंग्य नावक के तीर होते हैं पर वे नुकीले, कटीले और चुटीले होते हुए भी रसीले होते हैं। वे कुमकुम की तरह मीठी चोट करते हैं, रेशमी फुहारों की तरह गुदगुदा देते हैं। मगर कभी-कभी उनके व्यंग्य की मोटी पिचकारियों की तेज़ धार तिलमिला भी देती है।

वैष्णव की फिसलन हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाओं का एक महत्वपूर्ण संकलन है ।हरिशंकर परसाई का व्यंग्य बहुमुखी है। पुलिस का भ्रष्टाचार हो अथवा मंत्रियों की कारगुजारी,फिल्म हो अथवा देश की अर्थव्यवस्था व्यंग्यकार की कलम उस पर गहरा प्रहार करती है। धर्मके पाखंड पर लेखक ने पौराणिक सन्दर्भों एवं वर्तमान विषयों को लेकर काफी तीखे आघातकिये हैं। वहीं हरिमोहन झा के 'खट्टर काका' में मैथिली लोकजीवन का चित्रण हुआ है । इस कृति में मध्यवर्गीय समाज में फैले अंधविश्वास और रूढ़िवादिता पर चोट किया गया है ।आज के जीवन की विसंगतियों और विरूपताओं, अवरोधों और कुंठाओं पर जब वे चोट करते है और बराबर चोट करते चलते है तो उनकी नुकीली कलम हथियार बन जाती।